विद्यार्थियों को विचारवान बनाने में शिक्षक की भूमिका

डॉ0 तारकेष्वर गुप्ता[1]

सहायक प्रोफेसर (बी0 एड्0)

महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

हरदोई, उत्तर–प्रदेष।

tarkeshwar.gupta1@gmail.com

Abstract— शिक्षा त्रिध्रुवीय प्रकिया है जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी और विषय–वस्तु सम्मिलित हैं। वातावरण को भी इस प्रकिया का एक अंग माना जाने लगा है। ये सभी प्रकियाएँ समाज में घटित होती हैं तथा सामाजिक नियमों के आधार पर संचालित होती हैं। मनुष्य समाज में ही रहता है तथा विचार भी करता है, इसलिए मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है साथ ही विचारशील प्राणी भी। समाज में घटने वाली प्रत्येक घटना उसका ध्यान आकृष्ट करती है। मनुष्य प्रकृति के बिल्कुल नजदीक रहा है जिससे उसका परिवर्तित स्वरूप भी उसके मस्तिष्क को विचारशील बनाती रही है। इसलिए प्रकृति में घटने वाली प्रत्येक नयी घटना की व्याख्या करने के लिए उत्सुक हो जाता है। जगत की उत्पत्ति, जगत का प्रयोजन, जगत का विकास, ईश्वर का अस्तित्व और स्वरूप, ईश्वर और जगत का सम्बन्ध तथा ईश्वर और मनुष्य में सम्बन्ध आदि समस्याएँ व्यक्ति की सोच को प्रभावित करती हैं।

विचार क्या है? विचार मनुष्य के मस्तिष्क में क्यों आते हैं? और इन विचारों के आने से क्या होता है? ये सभी अति महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। इन प्रश्नों के सन्दर्भ में विचार करें तो यह बात सामने आती है कि विचार एक मानसिक प्रक्रिया है और विचार मस्तिष्क में आते हैं। इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि ''जब दृश्य जगत के सन्दर्भ में मनुष्य की बौद्धिक शक्ति कुछ सोचती है और उसका प्रकटीकरण करती है, उसे ही सम्भवतः विचार कहा जाता है।'' प्रकृति विचार का केन्द्र बिन्दु है, प्रकृति परिवर्तनशील भी है। इसी परिवर्तनशीलता के कारण मनुष्य की जिज्ञासा बलवती होती रहती है और यही जिज्ञासा विचार को जन्म देती है। विचार से नवसृजन होता है तथा इसी नवसृजन से वर्तमान और भविष्य दोनों की दिशा तय होती है।

Keywords: विचार, चिन्तन, मानसिक प्रक्रिया, बौद्धिक शक्ति, प्रकृति, अनुसंधान, परावर्तन, स्वसंवेदी आदि।

I प्रस्तावना (Introduction)- आधुनिक युग की सबसे बड़ी विशेषता वैज्ञानिक अन्वेषण और अनुसंधान है, जिसने मानव को नया रास्ता दिखलाया। वैज्ञानिक खोजों के कारण मनुष्य के दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन हो गया। कोपरनिकस ने सिद्ध किया कि सृष्टि का केन्द्र सूर्य है और पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। छापाखाने के आविष्कार ने ज्ञान के प्रकाश को चर्च की चहारदीवारी से बाहर ला दिया। विज्ञान का प्रभाव बढ़ने लगा तथा आधुनिक दर्शन में नवीन जागृति एवं प्रगति का मार्ग प्रशस्त होने लगा। मौलिकता का महत्व बढ़ने लगा तथा स्वतंत्र चिन्तन, स्वतंत्र भावना तथा स्वतंत्र कर्म के कारण यह युग बौद्धिक युग कहा गया। ये सभी बातें विचार के माध्यम से ही सामने आयी।

विचार क्या है? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। सामान्यतया विचार की प्रक्रिया को देखा जाय तो प्रकृति में घटने वाली किसी भी घटना से मनुष्य में संवेदन (Sensation) की क्रिया सर्वप्रथम होती है तब व्यक्ति उस घटना का प्रत्यक्षण (Perception) करता है, तत्पश्चात् विचार की प्रक्रिया आरम्भ होती है। वैसे भी देखा जाय तो प्रकृतिजन्य घटित घटनाओं को मनुष्य देखता है फिर सोचता है कि अमुक घटना के घटित होने पीछे क्या कारण हो सकता है? जैसे– किसी छोटी नदी में बाढ़ आने का क्या कारण हो सकता है, इसके विचारणीय बिन्दु सम्भवतः हो सकते हैं– भारी वर्षा का होना, किसी बाँध का तटबन्ध टूट जाना तथा नहरों द्वारा अधिक पानी उस नदी में छोड़ दिया जाना। इस प्रकार अत्यधिक जलराशि को देखकर अचानक मस्तिष्क में विचार का प्रारम्भ हो जाना कि यह बाढ़ आ गयी। इसी को सम्भवतः विचार (Thought) कहा जा सकता है। विचार में अव्यक्त मानसिक प्रक्रिया होती है और घटना का मूर्त रूप ही विचार की परिणति हो सकती है।

विचार प्रत्ययों के माध्यम से अपने से पृथक एवं स्वतंत्र जगत को चित्रित करने का प्रयास करता है। ''जब मनुष्य के हृदय की तरंगें ब्रह्माण्ड में गुंजित ध्वनि से सम्बन्ध स्थापित करके मानसिक तरंगों से जोड़ती हैं तब विचार का आगमन होता है।'' अतः जगत में विद्यमान प्रत्यय मनुष्य को उद्दीपक (Stimulus) प्रदान करते हैं तथा अनुक्रिया (Response) हेतु आकर्षित करते हैं, यही स्थिति विचार की होती है। मनुष्य किसी स्थिति को लाने या उस पर पहुँचने हेतु विचार करना प्रारम्भ करता है और यही विचार कार्य रूप में परिणत हो जाता है। कार्य की सुन्दरता विचारों की सुन्दरता पर आधारित होता है। उत्तम विचार से उत्तम कार्य की निष्पत्ति होती है। विचार जगत का समर्थन करता है तथा उसके स्वरूप को प्रस्तुत करने की अनवरत् चेष्टा करता है।

विश्व की कोई भी सभ्यता बिना विचार के पुष्पित और पल्लवित नहीं होती तथा कोई भी सभ्यता सर्वदा दोषमुक्त और दोषयुक्त नहीं हो सकती। यदि हम किसी प्राचीन सभ्यता के स्वर्णिम इतिहास पर विचार करें तो पायेंगे कि उस सभ्यता के विकास में विचारवान पुरूषों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। वे विचारक स्वार्थों की सीमा से परे राष्ट्रहित को सर्वोपरि माना होगा तब वे सभ्यताएँ इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हैं। तथा वे विचार युग–युगान्तर बने रहे। उन सभ्यताओं के पतन पर दृष्टिपात करें तो ऐसे विचारक आये जिन्होंने निजी हितों को सर्वोपरि रखा और वे सभ्यता के पतन के कारण बनीं किन्तु वे विचार कालजयी हो गये तथा यही विचार उदाहरण के लिए प्रयुक्त होते रहते हैं।

चिन्तन (Thinking) को विचार (Thought) का समानार्थी माना जाता है। चिन्तन मस्तिष्क की एक अवस्था है, अभ्यास का एक संघटक है, यह पाठ्यक्रम या तकनीक का कोई तत्व नहीं है। आशय यह है कि हम चिन्तन को मनोविज्ञान का केवल एक शब्द मान

लेते है जबकि यह समस्या और समाधान के बीच होने वाली एक प्रक्रिया होती है। चिन्तन एक अप्रकट व्यवहार (Convert Behaviour) है। चिन्तन प्रक्रिया की शुरुआत तब होती है, जब मनुष्य के सामने ऐसी परिस्थिति या घटना घटित होती है जिसके समाधान तक पहुँचने का कोई रास्ता दिखायी नहीं देता है। इस अवस्था में मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार की कल्पनाएँ आती हैं जिनको तर्क के सहारे समस्या के समाधान तक पहुँचा जाता है। इसीलिए चिन्तन को समस्या–समाधान व्यवहार भी कहा जाता है।

विचार की प्रक्रिया में स्वसंवेदी विचार (Reflective Thought) बहुत आवश्यक है क्योंकि यह उच्च स्तर का विचार है जिसका एक निश्चित लक्ष्य होता है। इसका उद्देश्य जटिल समस्याओं को हल करना होता है साथ ही समस्त अनुभूतियों का पुनर्गठन करके उनमें स्थिति का सामना करने के लिए रास्ते निकाले जाते हैं। इस विचार में तर्क को सामने रखकर सभी सम्बन्धित तथ्यों को तर्करूप क्रम में गठित करके उनसे प्रस्तुत समस्या का समाधान निकाला जाता है। स्वसंवेदन (Reflection) समस्या की अनुक्रिया और सामना करने तक के तरीकों में सम्मिलित होता है। स्वसंवेदी विचार (Reflective Thought) का जीवन के सभी क्षेत्रों में बहुत महत्व है, विचार जीवन को समृद्ध करने के लिए आवश्यक है। वैसे तो विचार के लिए घर, समाज, शैक्षिक संस्थान तथा प्राकृतिक सुरम्यता के वातावरण उपयोगी और आवश्यक होते हैं।

स्वसंवेदी विचार (Reflective Thought) का शिक्षा द्वारा नियंत्रित होकर प्राकृतिक वातावरण की ओर झुकाव स्वाभाविक है, इस पर सामाजिक प्रभाव भी विद्यमान है क्योंकि मनुष्य समाज के सन्दर्भ में ही विचार अधिक करता है। विचार तो प्रत्येक प्राणी करता है, कुछ का विचार स्वयं तक सीमित रहता है तथा कुछ का स्वयं और समाज के सन्दर्भ में एवं कुछ का स्वयं, समाज, ईश्वर और सम्पूर्ण ब्राह्माण्ड होता है। सामाजिक सन्दर्भ के विचार समाज को उन्नत तथा विकसित करने के लिए प्रयासरत् रहते हैं। ऐसे विचारकों का एक मुख्य उद्देश्य यह भी होता है कि समाज का प्रत्येक प्राणी सामाजिक सन्दर्भों के सापेक्ष कार्य करे, किन्तु ऐसा हो नहीं पाता। ब्राह्माण्ड तक का विचार करने वाला व्यक्ति प्रकृति के प्रत्येक उपादानों से शिक्षा ग्रहण करने का संकेत करता है तथा उसके विचार में उदाहरण भी प्रकृति के होते हैं।

भारतीय शास्त्रों में विद्यार्थी जीवन के सन्दर्भ में बहुत तथ्य प्राप्त होते हैं। भारतीय समाज ने प्रत्येक क्षेत्र में ऐसे नक्षत्र दिये हैं जो आज भी प्रकाशमान हैं और सदा रहेंगे। एक सूक्ति– काग चेष्टा बको ध्यानम, स्वान निद्रा तथैव च।

अल्पहारी गृह त्यागी, विद्यार्थी पंचलक्षणम्।

इस सूक्ति के आलोक में विद्यार्थी के लक्षणों की विवेचना की जाती है जो विचारवान बनने का प्रथम सोपान है। विद्यार्थी जीवन ब्रह्मचर्य, तपस्या और संघर्ष का समय होता है। विद्यार्थी में कुशाग्रता प्रकृति प्रदत्त भी होती है और स्व अर्जित भी। प्रत्येक विद्यार्थी स्वसंवेदी विचार (Reflective Thought) तक नहीं पहुँच पाता क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी में व्यक्तिगत भिन्नता (Individual difference) सर्वविदित है। फिर भी हम समाज में शिक्षा की संस्थाओं औपचारिक (Formal) अनौपचारिक (Informal) तथा गैरऔपचारिक (Non Formal) में विचारवान बनाने की प्रक्रिया का अनुसरण करते हैं।

शिक्षा की औपचारिक संस्था (विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय) हैं। इन संस्थाओं में अध्यापन कार्य कर रहे अध्यापक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है तथा यदि स्वसंवेदी अध्यापक (Reflective Teacher) की बात की जाय तो अध्यापक शब्द की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है क्योंकि एक सामान्य अध्यापक विषय–वस्तु और विधि की परिपाटी से बाहर निकल नहीं पाता और अपना कार्य किये जाता है, जबकि स्वसंवेदी अध्यापक सक्रियता से अपने शिक्षण से ऊपर जाकर विचार करता है एवं शैक्षिक, सामाजिक और राजनैतिक सन्दर्भ में अन्तःस्थापित (Embedded) शिक्षण क्रिया से ऊपर क्रियाशीलता का प्रदर्शन करता है। ऐसे अध्यापक अपने विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत होते हैं और उन्हें विचार की प्रक्रिया में लाने हेतु महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

II. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन (Review of Related Literature)-

मिटगन, आर0 (2000), ने ''द कन्सेप्ट ऑफ एक्सपेरीमेन्ट लर्निंग एण्ड जॉन डीवीज थ्योरी ऑफ रिफ्लेक्टिव थॉट एण्ड एक्षन'' षीर्षक के अध्ययन के निष्कर्ष में स्पष्ट किया कि डीवी का प्रयोगात्मक गतिविधि और विचार के विषय में स्पष्ट मत हैं कि कार्य करने के तरीकों और आदतों में बिना बाधा के कोई प्रतिक्रियात्मक विचार नहीं है। मनुष्य और पर्यावरण के बीच वस्तुनिष्ठ रूप से अनुभव सम्मिलित है। अनुभव के लिए मनोवैज्ञानिक अवस्था कोई मुद्दा नहीं होता। किसी व्यक्ति की क्षमता और उसकी क्षमताओं में विष्वास तथा व्यक्तिगत अनुभव सांस्कृतिक, सामाजिक परिस्थितियों के विष्लेषण से हमें दूर ले जाती है। सीखने के लिए परिवर्तन और उसे आगे बढ़ाने के लिए वास्तविक जीवन में गम्भीर उद्यम आवष्यक है।

कुमार, एस0 व माने के0 एच0 (2022), ने ''ए ब्रीफ लिटरेचर रिव्यू ऑफ कन्सेप्ट मैपिंग फार रिफ्लेक्टिव प्रैक्टिस'' षीर्षक के अध्ययन के परिणाम में पाया कि षिक्षक–षिक्षा के रूप में चिन्तनषील षिक्षण जो षिक्षण और अधिगम से सम्बन्धित है, उन आवष्यक रणनीतियों और षैक्षणिक उपकरणों की योजना द्वारा अवधारणा मानचित्रण जैसा मूल्यवान उपकरण निर्मित हो जाता है। जिसे षिक्षक, षिक्षण और अधिगम के लिए उपयोग कर सकते हैं। साथ ही यह विभिन्न कारकों के बीच परस्पर सम्बन्ध भी बनाता है।

किजिलडबा, ए0 (2022), ने ''रिफ्लेक्तिटव थिंकिंग एण्ड प्रोफेषनल डेवलपमेन्ट एन एन्थोग्राफी ऑफ ऐन ईएफएल टीचर एडुकेटर'' षीर्षक के अन्तर्गत अध्ययन में पाया कि स्वसंवेदी चिन्तन का अभ्यास किये बिना चिन्तनषील अभ्यासकर्ता नहीं बना जा सकता तथा संज्ञानात्मक

प्रक्रियाओं का उपयोग करके उसके प्रतिबिम्बित रूप से षिक्षण के विभिन्न तरीकों, जैसे–पूछताछ, सम्बद्धता और तर्क के रूप सम्मिलित होकर विकास किया जा सकता है।

अध्ययन के उद्देष्य (Objectives of the Study)–

1– स्वसंवेदी प्रक्रिया का अध्ययन करना।

2– स्वसंवेदी विकास का अध्ययन करना।

3– स्वसंवेदी विचार के प्रमुख घटकों का अध्ययन करना।

उद्देष्य 1–स्वसंवेदी प्रक्रिया का अध्ययन करना।

स्वसंवेदी प्रक्रिया (Reflective Process)– स्वसंवेदी विचारक (Reflective Thinker) के लिए कुछ ऐसे तथ्य हैं जिन पर विचार किया जा सकता है। हम कक्षा–कक्ष की परिस्थिति में सीखना (Learning), ज्ञान (Knowledge) तथा समझदारी (Understanding) की प्रक्रिया को आधार बना सकते हैं, साथ ही कुछ क्रिया भी करायी जा सकती है। आलोचनात्मक समीक्षा की प्रक्रिया को सम्मिलित किया जा सकता है तथा व्यक्तिगत एवं अकादमिक विकास को प्राथमिकता देना, अधिगम की प्रक्रिया को स्वसंवेदी (Reflection) क्रिया द्वारा विकसित करना साथ ही अभ्यास की स्थिति में प्रेक्षण से सिद्धान्त का विकास करना, निर्णयों का निर्माण/संकल्पों की निश्चितता, समस्याओं का समाधान करना तथा बौद्धिक सशक्तिकरण जैसे तथ्यों को सम्मिलित करना चाहिए। अप्रत्याशित परिणाम, प्रतिमा, असमंजस की स्थिति पैदा करने वाले विचारों का समाधान तथा सर्जनात्मक क्रिया–कलाप होने चाहिए। संवेगों का समायोजन, स्पष्टीकरण और अभिज्ञान की अतिरिक्त आवश्यकता होनी चाहिए।

स्वसंवेदी प्रक्रिया (Reflective Process) के अन्तर्गत उपरोक्त उल्लेखित तथ्यों पर विचार करने के उपरान्त हम क्या सोचते हैं और क्यों सोचते हैं? क्या हमारे सोचने का ढ़ंग सकारात्मक है? क्या हमारे सोचने की सीमाओं का ज्ञान हमें है? क्या हम सामाजिक, शैक्षिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों के विषय में विचार करते हैं? विद्यार्थी क्या जानते हैं? उन्हें क्या जानने की आवश्यकता है? और उनकी जानकारी का मूल्यांकन कैसे हो? कैसे अधिगम परिस्थितियों के अन्तराल के समय को जोड़ सकें? जैसे प्रश्नों के उत्तर आसानी से प्राप्त किये जा सकते हैं। ये ऐसे प्रश्न हैं जो अध्यापक और विद्यार्थी दोनों के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि अध्यापक इन्हीं प्रश्नों के सहयोग से विद्यार्थी में बौद्धिक विकास की सम्भावना की तलाश करता है तथा विद्यार्थी इन्हीं प्रश्नों के आधार पर विचारशीलता की प्रक्रिया में आगे बढ़ता है।

उद्देष्य 2– स्वसंवेदी विकास का अध्ययन करना।

स्वसंवेदी विकास (Reflective Development) में निष्पक्ष और स्वतंत्र विचार कैसे विकसित हो यह एक अति महत्वपूर्ण प्रश्न है? इस प्रश्न के सन्दर्भ में यह कह सकते हैं कि स्वयं इसकी पहल तो अध्यापक की तरफ से ही होती है। और स्वसंवेदी अध्यापक की अभिवृत्ति (Attitude) में तीन बिन्दु महत्वपूर्ण हैं।

1.Open mindness (खुला विचार)

2. Responsibility (उत्तरदायित्व)

3. Wholeheartedness (सम्पूर्ण सहृदयता)

1. खुला विचार (Openmindness)– स्वसंवेदी अध्यापक वह है जो विषय–वस्तु, विधि और प्रक्रिया का प्रयोग करते समय विचार खुला रखे। उसे अपने छात्रों के परिस्थितियों एवं सम्बन्ध का पुनर्मूल्यांकन स्थिर होकर करना चाहिए। अध्यापक को केवल यह नहीं पूछना चाहिए कि यह पदार्थ या कार्य ऐसा क्यों है? बल्कि यह भी सम्मिलित करना चाहिए कि इसे इससे अच्छा कैसे किया जा सकता है। कार्य को अच्छा करने के तौर–तरीकों पर विचार करे तथा वर्तमान के लिए उपयोगी विधि एवं प्रविधि का प्रयोग करे। विद्यालय में कार्य का अभ्यास तर्क संगत नहीं होता। क्योंकि विद्यालय को नये ज्ञान का स्थल होना चाहिए, यदि ऐसा किया जाता है तो फिर यह पुरानी परम्परा को ही नया कपड़ा पहनाने जैसा होगा।

2. उत्तरदायित्व (Responsibility)–शिक्षण कार्य नैतिक एवं उत्तरदायित्व पूर्ण है। जब अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों में चरित्रबल निर्माण एवं संकल्पित निर्णयों के कार्य को मूर्त रूप दिया जाता है तब विद्यार्थी सब कुछ छोड़कर शैक्षिक उद्देश्यों का लाभ प्राप्त करता है। ये निर्णय सचेतन क्रिया विधि है और इससे निश्चित रूप से अपेक्षित परिणाम प्राप्त होता है तथा यह कार्य तब और महत्वपूर्ण हो जाता है जब अध्यापक पाठ्यक्रम विकास और अनुदेशनात्मक सामग्री का चयन करता है। अनुदेशन सामग्री की सहायता से उपलब्ध साधनों के सन्दर्भ में स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है तथा छात्रों के व्यवहार को परिमार्जित किया जाता है।

3. सम्पूर्ण सहृदयता (Wholeheartedness)–विचारों में खुलापन एवं उत्तरदायित्व की स्वीकृति शिक्षण और व्यवहार के सक्रिय आयाम हैं। स्वसंवेदी अध्यापक वही होता है जो सभी विद्यार्थियों के प्रति समर्पित रहता है और सभी को सहृदयता पूर्वक स्वीकार करता है। वह

प्रत्येक विद्यार्थी को अद्भुत मानते हुए अपने उत्तरदायित्व को स्वीकार करता है। स्वसंवेदी शिक्षक के शिक्षण व्यवहार से ही उसके शिक्षण दर्शन और पथ प्रदर्शन की वांछनीयता निश्चित रूप से प्रदर्शित होती है।

एक विद्वान Van de walles (1995) ने सुझाव दिया कि अध्यापक चिन्तन पूर्ण विचार को आगे बढ़ाने के लिए तथा पाठ की संरचना को प्रोत्साहन देने के लिए छः तरीके प्रयोग में ला सकता है।

1– समस्या–समाधान वातावरण की सृष्टि करना।

2– प्रतिमान में हेर–फेर, आरेखण और गणना करना।

3– अन्तःक्रिया और विवेचना हेतु प्रोत्साहित करना।

4– सहयोगी अधिगम समूहों का प्रयोग करना।

5– अनुक्रिया की स्वप्रामाणिकता की अपेक्षा करना।

6– सक्रियता या क्रियाशीलता पूर्वक सुनना।

उद्देष्य 3– स्वसंवेदी विचार के प्रमुख घटकों का अध्ययन करना।

III. स्वसंवेदी विचार के कुछ अन्य महत्वपूर्ण घटक (Some important component of Reflectice Thought)

स्वसंवेदी कौशल (Reflective Skill)– स्वसंवेदी कौशल जाँच करने की प्रक्रिया है। यह सही प्रत्यक्षण को अन्य लोगों के साथ होने वाले सम्प्रेषण को छोटे–छोटे भागों में विभाजित करके उसकी जाँच करते हुए सत्यापित भी करता है। विद्यार्थियों में इस कौशल के विकास से उनमें प्रत्यक्षण और समस्या के सत्यापन एवं समाधान की कला विकसित होती है। इसके द्वारा विचार को सूक्ष्म स्तर पर समझने, महसूस करने, अर्थ की निष्पत्ति करने अन्य के साथ समायोजन करने में सहयोग प्राप्त होता है।

स्वसंवेदी अधिगम (Reflective Learning)– अधिगम क्रियात्मक एवं विचारात्मक दोनों प्रकार की प्रक्रिया है। यद्यपि हम अधिगम द्वारा करके सीखते हैं, सम्प्रत्यय की संरचना करते हैं, चरित्र का निर्माण करते हैं, सार्थक और शालीनता से बातचीत करते हैं तथा अनुभवों को लिखते भी हैं। हम अधिगम चिन्तन के द्वारा घटनाओं, गतिविधियों और अनुभवों का सत्यापन भी करते हैं। अधिगम में अनुभवों (क्रियात्मक) और विचार (चिन्तन) के सम्मिलन से नये ज्ञान का सृजन होता है। करके सीखने में अध्यापक और विद्यार्थी दोनों को अनुभव प्राप्त होता है जो अधिगम की प्रक्रिया को दिशा प्रदान करता है। समस्या के समाधान में चिन्तन की बहुत बड़ी भूमिका होती है।

स्वसंवेदी अभ्यास (Reflective Practice)– स्वसंवेदी चिन्तन में शिक्षा का अभ्यास महत्वपूर्ण घटक के रूप में विशिष्ट पहचान रखता है। यह अधिगमकर्ता को विषय सम्बन्धी होने वाले भ्रम का निवारण करने हेतु अवसर उपलब्ध कराता है तथा उन्हें क्या करना है? और क्यों कर रहें हैं? की रिक्तता को भरने में सहायता करता है। कार्य के अभ्यास द्वारा विद्यार्थी भूल करता है, पुनः भूल में सुधार करता है और ऐसा कई बार होता है तब एक समय ऐसा आता है जब विचारशीलता में दृढ़ता आती और समस्या का समाधान हो जाता है।

स्वसंवेदी शिक्षण (Reflective Teaching)– Wrld Book Encyclopaedia के अनुसार ''शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति दूसरे को ज्ञान, कौशल तथा अभिरूचियों को सीखने या प्राप्त करने में सहायता करता है।'' शिक्षण की इस परिभाषा में स्वसंवेदी शिक्षण के विस्तार की झलक स्पष्ट है। स्वसंवेदी शिक्षण में आन्तरिक कथन (Internal Speech) एवं सामाजिक कथन (Social Speech) सम्मिलित है। यह सम्प्रत्यय विशेष रूप से लक्ष्य, मूल्य और शिक्षा के सामाजिक सरोकार को अंकित करता है। स्वसंवेदी शिक्षण की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं।

1–स्वसंवेदी शिक्षण लक्ष्यों और परिणामों के साथ क्रियाशीलता से उसी प्रकार सम्बद्ध और अन्तर्निहित है जिस प्रकार साधन और क्षमता या कौशल।

2– स्वसंवेदी शिक्षण व्यावहारिक रूप से चक्रीय या सर्पिल प्रक्रिया है, इस शिक्षण में अध्यापक अपने अविच्छिन्न अभ्यास द्वारा संचालन, मूल्यांकन और सुधार करता है।

3– स्वसंवेदी शिक्षण में साक्ष्य–आधारित कक्षा की सक्षमता पूर्वक जाँच अपेक्षित है साथ ही उच्च स्तर के शिक्षण के प्रगतिशील विकास के लिए समर्थन भी आवश्यक है।

4– स्वसंवेदी शिक्षक को खुले विचारवाला, उत्तरदायित्व का निर्वहन करने वाला तथा सहृदय अभिवृत्ति वाला होना चाहिए।

5– स्वसंवेदी शिक्षण में अध्यापक के निर्णय, साक्ष्य–आधारित जाँच द्वारा सूचना और शोध परिणाम के सूक्ष्म दृष्टि पर आधारित है।

6– स्वसंवेदी शिक्षण में व्यवसायगत अधिगम को व्यक्तिगत सहयोग द्वारा बढ़ाना, अपने सहकर्मियों के साथ संवाद स्थापित करना तथा नियमों का पालन करना अपेक्षित है।

7– स्वसंवेदी शिक्षण शिक्षक को सर्जनात्मकता के बीच शिक्षण और अधिगम की रूपरेखा के वाह्य विकास को अधिकार देता है।

स्वसंवेदी लेखन (Reflective Writing)– स्वसंवेदी लेखन के अन्तर्गत लेखक द्वारा वास्तविक या कल्पना के आधार पर किसी दृश्य का वर्णन करना, किसी के साथ अन्तःक्रिया स्थापित करना, अपने अस्थायी विचार, स्मृति तथा व्यक्तिगत स्वसंवेदन के योगात्मक अर्थ का वर्णन सम्मिलित रहता है। साथ ही किसी वस्तु का गुणात्मक वर्णन, किसी प्रसंग का भावात्मक चित्रण, किसी विचार की विश्लेषणात्मक प्रस्तुति, किसी घटना को महसूस करना एवं अपने संवेग या अपने जीवन की अवस्थिति का तथ्यात्मक वर्णन करता है। बहुत से स्वसंवेदी लेखक अपने मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार के प्रश्न सदैव रखते हैं। जैसे–समाज में शिक्षक की प्रासंगिकता क्यों है? दार्शनिक विचारों का क्या महत्व है? इत्यादि।

स्वसंवेदी लेखन व्यवसायगत स्वमूल्यांकन और व्यक्तिगत विकास से सम्बन्धित है। लेखक अधिक सामान्य मुद्दों पर भी लिखता है तथा प्रभावित करने वाले मुद्दे एवं उनके निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास करता है। स्वसंवेदी लेखन में अधिगम डायरी, निबन्ध डायरी, साथी समीक्षा (Peer Review), दूसरे से प्रतिपुष्टि (Feedback) प्राप्त करना, क्षेत्र कार्य (Field Work) की आख्या (Report) तैयार करना तथा अधिगम पत्रिकाओं के लेखन कार्य अपेक्षित रहते हैं। साथ ही लेखक के विचारों में संवेदनशीलता बनी रहनी चाहिए।

स्वसंवेदी अधिमकर्ता (Reflective Learner)– अधिगमकर्ताओं की दो श्रेणी होती है, एक श्रेणी निष्क्रिय अधिगमकर्ता (Passive Learner) की जो मूल पुस्तक (Textbook) पत्रों के लेख (Journal articles) पढ़ता है, व्याख्यान सुनता है और रटी हुई स्मृति के आधार पर परीक्षा में लिखता है किन्तु सक्रिय अधिगमकर्ता (Active Learner) अपने समूह में प्रतिभाग करता है, अपने समूह के साथियों के साथ संवाद स्थापित करता है। महत्वपूर्ण यह है कि जब अधिगमकर्ता स्वयं से संवाद स्थापित करने लगे तो यह समझना चाहिए कि एक स्वसंवेदी अधिगमकर्ता का उद्भव हुआ है।

स्वसंवेदी अध्ययनकर्ता की कुछ विशेषताएँ हैं।

1–स्वसंवेदी अधिगमकर्ता कार्य करने से पहले मौन होकर सोचने को वरीयता देता है।

2–स्वसंवेदी अधिगमकर्ता किसी सामग्री को साधारण तरीके से न पढ़ता है और न याद करता है। बल्कि उसकी समीक्षा हेतु प्रायः रूकता है तथा प्रश्न के उत्तर या अनुप्रयोग हेतु सोचता है।

3–स्वसंवेदी अधिगमकर्ता पढ़ने के लिए संक्षिप्त रूप से अपने शब्दों में नोट तैयार करता है। वह कुछ समय अधिक अवश्य लेता है लेकिन सामग्री को बेहतर बनाता है।

4–स्वसंवेदी अधिगमकर्ता के समक्ष जब अधिगम के समय नयी सूचना आती है तो वह कुछ समय के लिए रुकता है और नये तरीके से प्रयोग करने हेतु प्रयत्न करता है।

5–स्वसंवेदी अधिगमकर्ता कार्य को योजनाबद्ध और नियंत्रित तरीके से करता है तथा ज्ञान और कौशलों के प्रति जागरूक रहता है।

6–स्वसंवेदी अधिगमकर्ता स्वनिर्देशित एवं लक्ष्यनिर्देशित सूचनाओं हेतु उद्देश्यपूर्ण तलाश करता है।

स्वसंवेदी विचार महत्वपूर्ण क्यों है?– आधुनिक समाज अत्यधिक जटिल होता जा रहा है। समाज में परिवर्तन द्रुत गति से हो रहा है तथा सूचनाएँ भी उपलब्ध रहती हैं, ऐसे में व्यक्ति को स्थिर रहकर पुनः सोचने, निर्देशन में परिवर्तन करने और समस्या–समाधान नीति में बदलाव करना आवश्यक हो जाता है। इस परिवर्तन के दौर में यह आवश्यक है कि तत्काल स्वसंवेदी विचार अधिगमकर्ताओं को नयी नीति और नये ज्ञान के विकास में सहायता करे, क्योंकि जटिल होती जा रही परिस्थितियों में इसकी बहुत आवश्यकता है। स्वसंवेदी विचार उच्च स्तर के विचार कौशल के विकास को त्वरित गति प्रदान करता है जिसमें ज्ञान और समझदारी सम्मिलित है। उच्च स्तर के विचार का विकास अध्यापक और विद्यार्थी दोनों के लिए आवश्यक है। इससे समाज की जटिलताओं को सरल बनाने में सहयोग मिलता है, समाज के उच्च स्तर का विचार नये ज्ञान और विज्ञान में सहयोग, नये साहित्य का सृजन, नयी जीवन शैली, कला और संस्कृति के नये आयाम विकसित करने में सहयोग प्रदान करते हैं।

IV निष्कर्ष–उपरोक्त सम्पूर्ण विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि स्वसंवेदी अधिगमकर्ता के सृजन हेतु सर्वप्रथम स्वसंवेदी अध्यापक की आवश्यकता होती है। वह अध्यापक जिसमें असीम ज्ञान का भण्डार हो, कौशल युक्त शिक्षण की कला हो, कक्षा–कक्ष की परिस्थिति को प्रजातंत्रात्मक रखने की क्षमता हो, तार्किक क्षमता एवं निर्णय लेने की क्षमता हो, विद्यार्थियों की बुद्धि और कार्यक्षमता के अनुसार कार्य कराने का कौशल हो तथा मित्रवत् व्यवहारशील हो और स्वयं एक अधिगमकर्ता हो तो इसकी छाप विद्यार्थियों पर पड़ेगी।

अधिगमकर्ता से स्वसंवेदी अधिगमकर्ता बनने की प्रक्रिया में विद्यार्थी को अध्यापक, पाठ्यक्रम और वातावरण के रास्ते परिश्रम के द्वारा ज्ञान, कौशल, व्यवहार और चिन्तनशक्ति का विकास करना होता है। साथ ही तर्क शक्ति, निर्णय लेने की क्षमता, धैर्यशीलता तथा निरंतरता की आवश्यकता होती है। समूह में कार्य करना एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करना भी महत्वपूर्ण होता है। साथ ही किसी विषय

की गहराई में पहुँचने, निष्कर्ष निकालने तथा उसकी प्रस्तुति करने की आवश्यकता पड़ती है। यह तथ्य कि विचारवान बनने के लिए मस्तिष्क में विचार तथा उत्तम विचार का आना आवश्यक है, यह सत्य है और विचारवान बनाने की प्रक्रिया का आधार भी है।

सन्दर्भ सूची–

1. सिंह, बद्रीनाथ (2013). पाश्चात्य दर्शन की रूपरेखा. वाराणसीः आशा प्रकाशन।
2. तिवारी, केदारनाथ (2011). तर्कशास्त्र परिचय . पटनाः मोतीलाल बनारसीदास।
3. शर्मा, चन्द्रधर (2013). भारतीय दर्शन आलोचन एवं अनुशीलन. पटनाः मोतीलाल बनारसीदास।
4. https://www.researchgate.net/publication/307974218_A_Study_of_Reflective_Thinking_Level_of_Student_Teachers
5. https://www.eajournals.org/wp-content/uploads/A-Brief-Literature-Review-of-Concept-Mapping-for-Reflective-Practices.pdf
6. https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1308333.pdf
7. https://www.researchgate.net/publication/284786959_Reflective_Thinking_An_Analysis_of_Students'_Reflections_in_Their_Learning_about_Computers_in_Education
8. **http://rci.rutgers.edu/~tripmcc/phil/dewey-hwt-pt1-selections.pdf.**
9. **https://nursing-midwifery.tcd.ie/assets/director-staff-edu-dev/pdf/Development-of-Student-Skills-in-Reflective-Writing-TerryKing.pdf.**
10. http://csl.cofc.edu/documents/study-skills/online-library/learning_styles/inventory_of_learning_styles_characteristics_of_types_of_learners.pdf.
11. www.mheducation.co.uk/openup/chapters/9780335222407.pdf.
12. http://www.brown.edu/about/administration/sheridan-center/sites/brown.edu.about.administration.sheridan-center/files/uploads/ErtmerNewby1996_0.pdf.
13. http://www.wou.edu/~girodm/foundations/Grant_and_Zeichner.pdf.
14. http://www.dsw.edu.pl/fileadmin/www-ranlhe/files/Handbook_PRILHE.pdf.
15. http://www.sagepub.com/eis2study/articles/Loughran.pdf.
16. http://www.itslifejimbutnotasweknowit.org.uk/files/RefPract/Osterman_Kottkamp_extract.pdf.
17. http://www.freerangeproduction.com/Reflective%20Teaching.pdf.
18. https://scholar.google.co.in/scholar?q=Reflective+Thinking:+RT&hl=en&as_sdt=0&as_vis=1&oi=scholart&sa=X&ei=-etiVa_lKaL6ywPH2oOIDQ&ved=0CBoQgQMwAA.
19. http://lorien.ncl.ac.uk/ming/learn/ilsintro.htm.
20. http://www.princeton.edu/~alaink/PsyOrf322S04/PsyOrf322S04HarmanLec2.pdf.